छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों का बहिष्कार करो!
चुनावों से नहीं, संघर्ष से बदलो जिन्दगी!

प्यारे लोगो,

आगामी 11 व 19 नवम्बर को छत्तीसगढ़ विधानसभा के चुनाव होने जा रहे हैं। कांग्रेस, भाजपा, बसपा, भाकपा, माकपा आदि सभी चुनावी पार्टियां फिर एक बार जनता को भरमाने के लिए जोर शोर से प्रचार कर रही हैं। सत्तारूढ़ भाजपा और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस एक दूसरे को कड़ी टक्कर दे रही हैं और आरोप–प्रत्यारोपों की बौछार कर रही हैं। भाजपा ने अपने चुनावी अभियान की शुरूआत महीनों पहले से 'विकास यात्रा' के नाम से कर रखी है। वहीं कांग्रेस ने 'परिवर्तन यात्रा' के नाम से अपना चुनावी अभियान शुरू किया था। झीरमघाटी हमले के बाद से उसने 'बलिदानी माटी कलश यात्रा' के नाम से जनता की सहानुभुति बटोरने की कोशिश की है। चुनावों की घोषणा होते ही सभी पार्टियों में टिकटों के लिए छीना–झपटी शुरू हो गई। और कई नाराज नेता दल बदल रहे हैं। ये सभी चुनावी पार्टियां साम्राज्यवाद निर्देशित नीतियों को अमल करने और सामंतवाद–दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों की सेवा करने वाली पार्टियां ही हैं।

पिछले 65 सालों के 'स्वंतंत्र' शासन में जनता को शोषण–उत्पीड़न, भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई, बीमारी, भ्रष्टाचार के अलावा कुछ नहीं मिला है। देश की 77 प्रतिशत जनता रोजाना 20 रुपए से भी कम आय पर घोर बदहाली में गुजारा करने को मजबूर है। वहीं मुठ्ठीभर शोषक–लुटेरों की सम्पदाएं हजारों, लाखों करोड़ों में बढ़ रही हैं। लाखों करोड़ रुपए का कालाधन वो विदेशी बैंकों में छुपा रहे हैं।

कांग्रेस और भाजपा दोनों ही यह कहते नहीं थक रही हैं कि वे किसानों के मसीहा हैं। लेकिन सच्चाई ठीक इसके विपरीत है। 1990 की शुरूआत में कांग्रेस सरकार ने देश में पहली बार उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण की साम्राज्यवाद परस्त नीतियों पर अमल प्रारंभ किया था। उसके बाद में सत्तारूढ़ हुई भाजपा ने भी उन्हीं नीतियों को जारी रखा था। और जिन राज्यों में वह सत्तारूढ़ है वहां इन्हीं नीतियों पर अमल करती आ रही है। विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन जैसी साम्राज्यवादी मुद्रा संस्थाओं की शर्तों को लागू करते हुए किसानों को मिलने वाली सब्सिडियां खत्म कर दी गईं। नकली बीज, नकली खाद, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, समर्थन मूल्य का अभाव और कृषि लागत में हुई बढ़ोत्तरी के चलते किसान कर्ज के बोझ तले पिसते जा रहे हैं। कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की घुसपैठ अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ी है। इन सब कारणों से कृषि संकट गहरा गया। भूमि सुधार और भूमि हदबंदी कानून कागजों में ही सिमटकर रह गए हैं। पिछले 12 सालों में देशभर में दो लाख से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या कर ली। हर दिन लगभग 47 किसान आत्महत्या कर रहे हैं। जिन पांच राज्यों में ये घटनाएं ज्यादा घट रही हैं उनमें छत्तीसगढ़ एक है। किसानों से उनकी उपजाऊ जमीनें छीनकर सेज, बड़े बांध और अन्य भारी परियोजनाओं का निर्माण करने की नीतियों पर तेजी से अमल हो रहा है। विस्थापन की मार झेलने वालों में सबसे बड़ी संख्या आदिवासी किसानों की है। आज भी आदिवासी क्षेत्रों में खेती बहुत ही प्राचीनतम तरीकों में होती है। पैदावर बहुत कम है। सरकार की उपेक्षा का आलम यह है कि 'आजादी' के 65 सालों के बाद आज भी बस्तर में महज तीन प्रतिशत जमीनों को ही सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध हैं। अब तो ग्रीन हंट जैसे दमन अभियानों के चलते किसानों की जिन्दगी बद से बदतर होती जा रही है। इस तरह कांग्रेस और भाजपा दोनों ही पार्टियां किसानों के बहुत बड़े दुश्मन हैं।

कांग्रेस और भाजपा दोनों के शासनकाल में छत्तीसगढ़ में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय रही। महिलाओं के साथ बलात्कार की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। खासकर क्रांतिकारी संघर्ष वाले इलाकों में महिलाओं पर सरकारी सशस्त्र बलों के अत्याचार आम हो गए हैं। महिला सशक्तिकरण जैसी ढोंगी और खोखली बातें करने वाली सरकारें खुद ही महिलाओं का सबसे ज्यादा उत्पीड़न कर रही हैं। सरगुजा जिला में मीना खल्खो नामक नाबालिग आदिवासी लड़की के साथ पुलिस वालों ने सामूहिक बलात्कार कर फर्जी मुठभेड़ में उसकी हत्या कर दी। लेकिन सरकार ने दोषियों को सजा दिलवाने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि मामले की लीपापोती कर दी। सोनी सोड़ी नामक आदिवासी शिक्षिका के साथ छत्तीसगढ़ पुलिस ने जो जुल्म किया उसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है। एस्सार कम्पनी से माओवादियों को पैसा पहुंचाने में मध्यस्थता करने का झूठा आरोप लगाकर, अमानवीयता की सारी हदें तोड़ते हुए उन पर यौन हमला किया गया। इसके लिए जिम्मेदार दन्तेवाड़ा के तत्कालीन एस.पी. अंकित गर्ग को देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति के हाथों वीरता पुरस्कार दिलवाया गया जोकि अत्यंत शर्मनाक है। कांकेर स्थित जंगल वारफेर कॉलेज के जवानों ने आसपास के गांवों की बहू–बेटियों के साथ कई बार बदसलूकी की। झलियामारी आश्रमशाला में आदिवासी छात्राओं के साथ जो कुछ हुआ वह सभ्य समाज के लिए बेहद अपमानजनक है। रमन सरकार आदिवासी इलाकों में शिक्षा के क्षेत्र पर, खासकर छात्राओं की सुरक्षा पर कितनी लापरवाही बरत रही है इसका

यह एक उदाहरण मात्र था।

महिलाओं के साथ और नन्ही बच्चियों के साथ भी लगातार हो रहे बलात्कार की घटनाओं ने प्रदेश की जनता को बेहद आक्रोशित कर दिया। एक ओर अश्लील व कुत्सित संस्कृति को अंधाधुंध परोसते हुए और बढ़ावा देते हुए दूसरी ओर ऐसी घटनाओं पर घड़ियाली आंसू बहाना शोषक सरकारों के दोगलेपन का ही परिचायक है। महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से छत्तीसगढ़ बेहद खतरनाक स्थान बन गया जिसके लिए सरकारें खुद जिम्मेदार हैं। और महिलाओं के साथ बलात्कार की सबसे ज्यादा घटनाएं बस्तर जैसे संघर्ष इलाकों में घट रही हैं जिसमें पुलिस, एसपीओ और अर्द्धसैनिक बलों के जवान व अफसर ही दोषी हैं।

पिछले 3–4 सालों से देशभर में भ्रष्टाचार–घोटालों को लेकर खूब बहसें छिड़ी हुई हैं। कांग्रेस और भाजपा दोनों भी भ्रष्टाचार में बराबर लिप्त हैं। कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार पर, जो केन्द्र में पिछले 10 सालों से सत्तारूढ़ है, 2जी स्पेक्ट्रम, कामनवेल्थ गेम्स, आदर्श हाउजिंग सोसाइटी, कोयला घोटाला आदि बड़े–बड़े घोटालों के आरोप लगे थे। लाखों करोड़ रुपये का जनधन मंत्रियों और अधिकारियों ने डकार लिया। सरकार को मजबूरन कुछ मंत्रियों को जेल भेजने का निर्णय भी लेना पड़ा। वहीं भाजपा के कई मुख्यमंत्रियों के नाम भी कोयला घोटाले में सामने आए थे। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमनसिंह के बारे में मीडिया में अक्सर 'स्वच्छ छवि' वाले के रूप में चित्रित किया जाता है। लेकिन कोयला घोटाले ने उन्हें जनता के बीच में नंगा कर दिया। इसके अलावा भाजपा सरकार इंदिरा प्रियदर्शनी बैंक घोटाला, तेन्दुपत्ता घोटाला, धान खरीदी घोटाला आदि कई घोटालों में लिप्त रही है।

भाजपा कट्टर हिन्दू धर्मोन्मादी पार्टी है। इसके दस साल के शासनकाल में छत्तीसगढ़ में साम्प्रदायिकता का जहर लगातार फैलता रहा। घर वापसी के नाम से आदिवासियों को जबरन हिन्दू बनाने की कोशिशें वर्षों से जारी हैं। एकल विद्यालय के जरिए आदिवासी इलाकों में बच्चों के दिमाग में धार्मिक कट्टरपन भरा जा रहा है। मुसलमान और ईसाई धर्मों के खिलाफ नफरत फैलाने की साजिश जारी है। हिन्दू धार्मिक संस्थाओं को बढ़ावा देकर समाज को साम्प्रदायिक फासीवाद की ओर ले जाया जा रहा है। अब जबकि नरेंद्र मोदी जिसके हाथ दो हजार से ज्यादा मुसलमानों के खून से सने हैं, अब प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बना है, इससे साफ संकेत मिल जाता है कि भाजपा देश में साम्प्रदायिक फासीवाद को और ज्यादा भड़काने वाला है। वहीं खुद को धर्म निरपेक्ष बताने वाली कांग्रेस हिन्दू वोट बैंक पर नजर टिकाए रखते हुए साम्प्रदायिकता को परोक्ष रूप से बढ़ावा दे रही है।

छत्तीसगढ़ में पिछले दस सालों से जनता और जन संघर्षों पर घोर दमनचक्र चलाया जा रहा है। खास तौर पर 2005 में महेन्द्र कर्मा के नेतृत्व में सलवा जुडूम के नाम पर बस्तर में भारी दमन अभियान चलाया गया था। इस दौरान सैकड़ों गांवों को जलाया गया, लूटपाट और हत्यांए की गईं। सैकड़ों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार और कई की हत्या कर दी गई। हजारों लोगों को राहत शिविरों में बंदी बनाया गया था। जनता ने उसका वीरतापूर्वक प्रतिरोध करके हरा दिया। उसके बाद 2009 से आपरेशन ग्रीनहंट – यानी जनता पर युद्ध – के नाम से देशव्यापी दमन अभियान को शुरू किया गया। पिछले पांच सालों में दण्डकारण्य में सिंगारम से लेकर एड्समेट्टा तक कई सामूहिक जनसंहार हुए। गिरफ्तारियां, झूठे केसों में जेल भेजना बेरोकटोक जारी है। हजारों अर्द्धसैनिक बलों को उतार कर दण्डकारण्य को सैन्य छावनी में तब्दील किया गया। सेना के प्रशिक्षण के नाम से माड़ पर कब्जा करने की तैयारियां भी चल रही हैं। संक्षेप में कहा जाए तो दण्डकारण्य के निर्धनतम व शोषित बाशिंदों पर आज एक भयंकर युद्ध थोपा गया है। इसे बड़े कार्पोरेट घरानों को यहां की प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने की खुली छूट देने की मंशा से ही थोपा गया है। जनता इसके प्रतिरोध में खड़ी है।

इस पृष्ठभूमि में अब छत्तीसगढ़ में चुनाव हो रहे हैं। संघर्ष के इलाकों में ये चुनाव इस युद्ध के अंतर्गत ही चलाए जाएंगे। यानी बंदूक की नोंक पर लोगों को वोट डालने पर मजबूर किया जा रहा है जिसका विरोध करना जरूरी है।

प्यारे लोगो,

ऐसे चुनावों से हमें कुछ नहीं हासिल होने वाला है। संघर्ष से ही बदलाव संभव है। चुनावों में सरकारें बदल सकती हैं, शासक पार्टियां बदल सकती हैं, पर व्यवस्था नहीं बदलेगी। यह क्रांति से ही संभव है। आज दण्डकारण्य की जनता एक ऐतिहासिक लड़ाई लड़ रही है जोकि भारत की नव जनवादी क्रांति का हिस्सा है। आइए, चुनावों को कह दें बहिष्कार! जनयुद्ध का रास्ता चुनें! और संघर्ष के पथ पर दृढ़ता से कदम बढ़ाएं!

इंकलाबी अभिनंदन के साथ,

दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ (डीएकेएमएस)

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन (केएएमएस)

चेतना नाट्य मंच (सीएनएम)

10 अक्टूबर 2013